eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 03, March 2026

कितने पाकिस्तान में भारत विभाजन का यथार्थ'

डॉ चन्दन कुमार[1]
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर (हिंदी विभाग) राजकीय महाविद्यालय, पचमोहिनी सिद्धार्थनगर उ0प्र0

Received: 21 March 2026 Accepted & Reviewed: 25 March 2026, Published: 31 March 2026

Abstract

भारत के विभाजन (1947) ने उपमहाद्वीप के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक ताने–बाने को गहराई से प्रभावित किया। "कितने पाकिस्तान" शीर्षक, जो प्रसिद्ध साहित्यकार कमलेश्वर के उपन्यास से प्रेरित है, विभाजन के बहुआयामी यथार्थ को उजागर करता है। यह अध्ययन विभाजन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, साम्प्रदायिक तनाव, औपनिवेशिक नीतियों तथा सत्ता–हस्तांतरण की जटिलताओं का विश्लेषण करता है। विभाजन के परिणामस्वरूप उत्पन्न हिंसा, विस्थापन, मानवीय त्रासदी तथा सांस्कृतिक विघटन ने करोड़ों लोगों के जीवन को प्रभावित किया।

यह शोध "कितने पाकिस्तान" की अवधारणा के माध्यम से यह दर्शाता है कि विभाजन केवल भौगोलिक सीमाओं का बंटवारा नहीं था, बल्कि मानसिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक स्तर पर भी समाज को विभाजित कर गया। साहित्य, विशेषकर उपन्यास, इस त्रासदी को जीवंत रूप में प्रस्तुत करते हैं, जिससे इतिहास के सूखे तथ्यों के पीछे छिपी मानवीय संवेदनाएँ उजागर होती हैं। अध्ययन यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि विभाजन का यथार्थ आज भी साम्प्रदायिकता, पहचान संकट और सामाजिक असमानताओं के रूप में विद्यमान है, जो समकालीन भारतीय समाज के लिए एक महत्वपूर्ण चिंतन का विषय है।

मुख्य बिन्दु – भारत विभाजन, कितने पाकिस्तान, साम्प्रदायिकता, विस्थापन, मानवीय त्रासदी, सांस्कृतिक विघटन, पहचान संकट, उपन्यास साहित्य

Introduction

बीसवीं सदी के भारतीय इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण और सबसे बड़ी घटना सन् 1947 ई. में देश की आजादी के साथ हुआ उसका विभाजन है। देश का यह विभाजन हिंदुओं और मुसलमानों को दो अलग 'राष्ट्र' मानने की बुनियाद पर हुआ। हिन्दू और मुसलामानों को दो कौमें और दो राष्ट्र मानने की बात का, आजादी की लड़ाई का नेतृत्व करने वाली कांग्रेस ने यद्यपि शुरू से ही विरोध किया, किन्तु ब्रिटिश सरकार ने राजनीतिक शतरंज की जो गोटियाँ 19 वीं शदी के प्रारम्भ से ही बिछाई, उसके दबाव में और कुछ राजसत्ता पाने की हड़बड़ी में अंततः कांग्रेस को विभाजन का फार्मूला मानना पड़ा। धर्म के आधार पर भारत को दो टुकड़ों में बाँट दिया गया।

देश–विभाजन के बाद विभाजन के इस त्रासद प्रसंग पर हिंदी–उर्दू भाषाओं में बहुत कुछ लिखा गया है। देश–विभाजन पर हिंदी में लिखने वालों में यशपाल विशेष रूप से ख्यात रहे हैं। उनकी इस ख्याति का आधार दो भागों का उनका उपन्यास 'झूठा–सच' है। इस उपन्यास के पहले भाग 'वतन और देश' में विभाजन से पहले की और विभाजन के समय की वास्तविकताओं की कथात्मक प्रस्तुति है। दूसरे भाग 'देश का भविष्य' में देश के बंट जाने के बाद आजाद भारत में

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 03, March 2026

विस्थापितों के फिर से अपने को स्थापित करने का तथा आजादी के बाद देश की बदलती राजनीति का चित्रण है। 'झूठा–सच' के बाद राही मासूम रजा का उपन्यास 'आधा गाँव' और भीष्म साहनी का उपन्याय 'तमस' विभाजन की त्रासदी पर लिखे गए दो महत्वपूर्ण उपन्यास अधिक लोकप्रिय हुए। 'राही' के 'आधा गाँव' में पाकिस्तान से बहुत दूर उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले के गंगौली गाँव के मुसलमानों की पीड़ा को समेटा गया है जो यह नहीं जानते कि पाकिस्तान और जिन्ना कौन सी बला है। फुन्नन मियाँ का यह वाक्य कि– ''हई, जिन्ना साहब कहाँ के बाड़न?''[1] या सिब्तू मियाँ की बीबी की प्रतिक्रिया कि 'खुदा गारत करे इ पाकिस्तान को''[2] या, छिकुरिया की समझ से 'पाकिस्तान–कओ महजिद–ओहजिद होई।' लेकिन ये सभी पात्र गाँव की धरती से बहुत दूर बन रहे पाकिस्तान के कारण विभाजन की त्रासदी का दंश झेल रहे है। 'तमस' उपन्यास भी आजादी के समय के यथार्य का कथात्मक प्रस्तुतिकरण करता है। 'तमस' की कथा की अवधि के पाँच दिनों में विभाजन के ठीक पहले की उस बिगड़ती फिजा का चित्रण है, जिसमें हिन्दुओं के षड्यंत्र से दंगे होते हैं और उसमें सिर्फ आम जना की हत्या, बलात्कार और दमन होता है।

उपर्युक्त तीनों उपन्यासों के बाद 'कितने पाकिस्तान' को विभाजन का शिनाख्त करते हुए उस सिलसिले की अगली महत्वपूर्ण कड़ी माना जा सकता है। इस उपन्यास में घटनाएँ ही नहीं, अंग्रेजों की विभेदकारी नीतियाँ, विभाजन से प्रत्यक्षतः जुड़े माउंटबेटन और जिन्ना, रेडक्लिफ भी पात्रों की तरह लाए गए हैं। उपन्यास में अदीब द्वारा विभाजन से सम्बन्धित कई गोपनीय बातों का खुलासा तो किया ही गया है, साथ ही यह भी ऐतिहासिक सच्चाई पाठकों के सामने आती है कि आजादी और विभाजन एक पूर्वनिर्धारित षड्यंत्र था। भले ही जिन्ना तुरूप के पत्ते बनाए गए हों या फिर माउंटबेटन को न चाहते हुए भी विभाजन करना पड़ा हो, जैसा कि उन्होंने एक इण्टरव्यू में (कालिन्स, लापियर–'माउंटबेटन और भारत विभाजन में) स्वीकार किया है।

दरअसल विभाजन की जड़ें अंग्रेजों की नीतियों में ही छिपी हुई थी। उपन्यास में क्रमशः गिलक्रिस्ट, मैकाले और लार्डकर्जन खुद स्वीकारते हैं– ''फोर्ट विलियम कालेज में हमने मुंशी सदासुखलाल और मीर अम्मन को बुलाकर इनकी सम्मिलित भाषा की रीढ़ तोड़ दी थी ... मैंने अंग्रेजी शिक्षा अनिवार्य बनाकर फारसी को बेदखल किया। ... (लार्ड कर्जन) जो काम आज माउन्टबेटन ने किया है, उसकी शुरूआत मैंने सन् 1905 में ही कर दिया था। मुसलमानों के लिए पाकिस्तान बना दिया था... ढाके के नवाब से कहा था कि वह हिन्दू वर्चस्व से बचने के लिए अपनी अलग मुस्लिम पार्टी बनाए ... वही पार्टी है 'मुस्लिम लीग' – जिसने आज पाकिस्तान बनाया है।'[3] अंग्रेजों की भाषा और शिक्षा नीतियों ने सरकारी नौकरियाँ प्राप्त करने की प्रतिस्पर्धा में साम्प्रदायिकता को जन्म दिया। हिन्दू अभिजात वर्ग ने प्रारम्भ से ही पाश्चात्य शिक्षा ग्रहण करनी शुरू कर दी थी। अंग्रेजी शासन से पहले शासक वर्ग की भाषा फारसी थी और मुस्लिम अभिजातवर्ग ने मदरसों से शिक्षा ग्रहण की थी और वे फारसी संस्कृति को सुरक्षित रखना चाहते थे इसलिए उन्होंने आधुनिक शिक्षा का दृढ़ता से विरोध करने का निश्चय किया। वस्तुतः हिन्दू और मुस्लिम विभेद बढ़ते गए। अंग्रेजों की 'डिवाइड

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 03, March 2026

एण्ड रूल' की नीतियों को अमली जामा पहनाया गया। सदी के चौथे और पाँचवें दशकों में, खासतौर से जिन्ना को मुहरा बनाकर।

जिन्ना भारतीय इतिहास के दिलचस्प पात्रों में से एक हैं। शायद इसीलिए अदीब ने उनके आन्तरिक और बाह्य द्वन्द्वों और अन्तर्विरोध को एक विस्तार दिया है। दरअसल विभिन्न ऐतिहासिक, राजनीतिक सन्दर्भो में जिन्ना का व्यवहार बदलता गया। अपने शुरूआती दिनों में जिन्ना भी औरों की तरह ही राष्ट्रवादी थे। सरोजनी नायडू के शब्दों में– ''मुहम्मद अली जिन्ना और वजीर हुसैन ने मुस्लिम लीग में शामिल होने से पहले शपथ ली कि मुस्लिम लीग और मुस्लिम हितों के जुड़ाव से किसी भी समय और किसी भी तरह से राष्ट्रीय हितों को आँच नहीं आनी चाहिए, जिसके प्रति उनका जीवन समर्पित था। (हेक्टर बोलियों, जिन्ना–क्रियेटर ऑफ पाकिस्तान, ग्रीनकड प्रेस, वेस्ट पोर्ट, कॉनेक्टिक्ट, पृ. 58) वे मुस्लिम हितों के लिए राष्ट्रीय हितों को त्याग देने के विरूद्ध थे।[4] एक और खास बात यह भी की जिन्ना के गुरू भी गाँधी के गुरू गोपालकृष्ण गोखले ही थे। लेकिन यह मतलब नहीं है कि जिन्ना का मुस्लिम हितों से कोई लगाव नहीं था। राजमोहन गांधी ने कहा है – ''जिला का दृष्टिकोण अपने आपमें उदार और आधुनिक था, उन्हें धर्म और राजनीति का घालमेल पसंद नहीं था।'' लेकिन सन 30 के बाद जिला ने सिर्फ मुसलमानों के हितों को ही आगे रखा, (वे) पूर्णतः पश्चिमी सभ्यता में रंगे हुए थे। जिन्ना की इस्लाम में कोई धार्मिक आस्था नहीं थी। यहाँ तक कि वह सूअर का मांस खाना भी बुरा नहीं मानते थे, जिसकी इस्लाम में सख्त मनाही है।''[5] यह माना जाता है कि जिन्ना का अभिमानी व्यक्तित्व अतिराष्ट्रवादी दृष्टिकोण और अहंवादी व्यवहार देश के विभाजन के कारणों में से एक था, लेकिन सही बात तो यह है कि अपने इस कडा रूप लेने के कारण ही जिला अंग्रेजी सत्ता के तुरूप के पत्ते बन गए। उपन्यास में अदीब ने जिन्ना द्वारा 1934 के बाद संन्यास लेकर इंग्लैंड प्रवास के तीन वर्षों के दौरान जिन्ना द्वारा खास हस्तियों, राजनेताओं और चर्चिल से तीन मुलाकातों की ''गोपनीय बातों'' को पाकिस्तान निर्माण की प्रक्रिया का ही रूप माना है। अदीब ने यह सवाल भी उठाया है कि भारत का मजहबी–नमाजी मुसलमान जिन्ना जैसे गैर मजहबी, बेनमाजी, पोर्क से परहेज न करने वाले मुसलमान को कभी अपना लीडर स्वीकार नहीं करता अर्थात जिन्ना को ब्रिटिश साजिश के तहत मुसलमानों का नेता बनाया गया। अदीब माउन्टबेटन से कहता है – ''हैरत की बात है कि मजहब के नाम पर एक गैर मजहबी और एक ऐसे मुसलमान को लीडर बनाया गया जो कुरानशरीफ नहीं पढ़ सकता था, क्योंकि उसे अरबी और उर्दू तक नहीं आती थी। जो नमाजी नहीं था क्योंकि वह नमाज पढ़ना नहीं जानता था।''[6] ऐसे जिन्ना के नाम पर जिसका इस्लाम धर्म से कोई वास्ता नहीं था, मजहब का वास्ता देकर एक देश ''पाकिस्तान'' का निर्माण हुआ।

जिन्ना को ''प्लूरीसी और ब्रांकांइटिस'' नाम की बीमारी भी थी जिसके कारण जिन्ना बमुश्किल एक–डेढ़ साल जीते लेकिन जाल पटेल और लीगी नेताओं के कूटनीतिक चाल के कारण इस बात की जानकारी किसी को, विशेषकर माउन्टबेटन को नहीं थी। नहीं तो माउन्टबेटन विभाजन की त्रासदी

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 03, March 2026

को टाल सकते थे। यहाँ जिन्ना के बारे में माउन्टबेटन द्वारा 1972 में दिए गए इंटरव्यू का उल्लेख करना आवश्यक लग रहा है।

''फ्रीडम एट मिडनाइट'' के शोध के दौरान हमें पता चला कि 1947 में जिन्ना को तपेदिक था। डाक्टरों ने कहा था कि वह 6–7 महीने जीवित रहेगा। क्या आप यह जानते थे?

– नहीं कोई नहीं जानता था ..... भयंकर बात है, हमें कुछ नहीं बताया गया।

– जब आपने जिन्ना को यह समझाने की कोशिश की, कि जो पाकिस्तान वह बनाना चाहते हैं वह एकदम कीड़ों का खाया हुआ–सा होगा।

– कारण बताते हुए मैंने जिन्ना से कहा, वह भारत का विभाजन नहीं कर सकते विभाजन तो करना ही होगा। उन्होंने कहा। ... आखिरी मौका पर उस आदमी ने जो पाकिस्तान का शासन करना चाहता था, प्रधानमंत्री का पद न लेकर राज्य के संवैधानी प्रमुख का पद लिया।''[7]

जिन्ना के बंगाल डायरेक्ट एक्शन डे (जिसमें लाखों लोग साम्प्रदायिक हिंसा का शिकार हुए) और जिन्ना की जिद के कारण भले ही माउंटबेटन को भारत–विभाजन का निर्णय लेना पड़ा, लेकिन यह विभाजन का एकांगी पक्ष है। उपन्यास में जिन्ना की विडम्बना और त्रासदी को भी दर्शाया गया है कि जब उन्हें पंजाब और बंगाल से विभाजित दीमक लगा पाकिस्तान मिला तब वे पछताए थे और उनके रगों में बहता खालिस हिन्दुस्तानी खून जम गया था। अर्थात चाहे–अन्यचाहे रूप से वे ब्रिटिश नीतियों का मोहरा बनते चले गए । जिन्ना उन परिस्थितियों के दास बन गए जो अंग्रेजी नीतियों द्वारा पैदा की गई थी। यही कारण है कि माउंटबेटन के झूठ का सच जानने के लिए अदीब पूछता है लेकिन आप तो यह तय करके आए थे कि भारत को आजादी देनी ही पड़े तो कैसी आजादी दी जाए। नेहरू और पटेल को लंगड़ा भारत सौंप दिया जाए और जिन्ना को दीमक लगा पाकिस्तान थमा दिया जाए। इस महादेश का विभाजन कर दिया जाए।''[8] वास्तविकता भी यही रही थी क्योंकि जब टोडरमल माउंटबेटन से यह पूछता है कि क्या कारण है कि सिकन्दर, शक, हूण, मुहम्मद बिन कासिम, गौरी, नादिरशाह, अब्दाली, तुर्क, अफगान, मुगल या औरंगजेब ने इस देश का विभाजन नहीं किया, इस्लामिस्तान नहीं बनाया या नक्शे को नहीं बदला तो यह सवाल बहुत मानीखेज हो जाता है। यहाँ माउंटबेटन के तर्क झूठे पड़ जाते हैं।

20 फरवरी 1947 को हाउस ऑफ कॉमंस में एटली के उस प्रसिद्ध भाषण का यही तात्कालीन सन्दर्भ था, जिसमें उन्होंने जून 1948 को सत्ता हस्तान्तरण की अंतिम तिथि घोषित की थी। इस घोषणा के अनुसार यदि भारतीय राजनीति इस तिथि तक किसी संविधान पर सहमत नहीं होते तब भी अंग्रेजी सत्ता सौंप देते जैसा कि सुमित सरकार ने 'आधुनिक भारत' में लिखा है – 'चाहे यह हस्तान्तरण ब्रिटिश भारत की सरकार के स्थान पर स्थापित किसी केन्द्रीय सरकार को पूर्णतः हो या कुछ क्षेत्रों में वर्तमान प्रान्तीय सरकारों को या किसी ऐसे अन्य तरीके से जो सबसे समुचित और भारतीय लोगों के सर्वोत्तम हित में हो।''[9] इस घोषणा में विभाजन का ही नहीं, संभव हो तो अनेक प्रान्तीय राज्यों में भारत के विखण्डन का भी स्पष्ट संकेत था। दिललचस्प बात है कि माउंटबेटन

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 03, March 2026

द्वारा जिन्ना पर सारा आरोप मढ़ने और जिन्ना के 'बंगाल डाइरेक्ट एक्शन डे' के बहुत पहले सितम्बर 1946 में वेवेल ने अपने ब्रेकडाउन प्लॉन के अंतिम प्रारूप में 31 मार्च 1948 तक अंग्रेजों के पूर्णरूपेण से भारत छोड़ देने का सुझाव दिया था।

जाहिर है यह उपन्यास माउंटबेटन की अंग्रेजों और भारतीयों के बीच बनी उनकी उस छवि को तोड़ता है, जिसमें सैनिकों जैसे दो टूकपन, अपने आकर्षक व्यक्तित्व और चतुराई से भारतीय प्रायद्वीप की 'समस्याएं' को पलक झपकते ही हल कर दिया। बल्कि अदीबी गिरह से यह पता चलता है कि माउंटबेटन उस गर्दनतोड़ गति के लिए पर्याप्त उत्तरदायी थे, जिससे भारत के विभाजन की समस्त प्रक्रिया पूरी हुई। माउंटबेटन ने 3 जून को कॉंग्रेस, लीग, सिख नेताओं की स्वीकृति के कारण डोमिनियन स्टेटस के आधार पर भारत और पाकिस्तान की दो केन्द्रीय सरकारों की घोषणा कर दी जिसकी पुष्टि 18 जुलाई को ब्रिटिश संसद और सम्राट ने कर दी और 15 अगस्त को लागू हो गई। भारत में अंतिम दो–तीन महीनों में माउंटबेटन योजना के ब्यौरों को लागू करने का काम आश्चर्यजनक तेजी से हुआ। सीमा–रेखाएं खींचने का काम तो और भी त्वरित गति से हुआ। सिरियल रेडक्लिफ द्वारा खींची गई विभाजन रेखा उसी शीघ्रता का परिणाम थी। जैसा कि कॉलिंस और लापियर के इस साक्षात्कार से स्पष्ट है – ''क्या सही परिनिर्णय के लिए उन्होंने (रेडक्लिफ ने) आपसे एक–दो साल का समय मांगा था?

– मांगा था। लेकिन ज्यादा समय नहीं दे सकता था। 10 अगस्त मैंने उनके लिए तय कर दिया था।''[10]

एक और दिलचस्प बात यह थी कि रेडक्लिफ न तो समाजशास्त्री थे न ही भूगोलविद, बल्कि वे अंग्रेज जज थे, जिसे भारतीय परिस्थितियों या उसके भूगोल के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। ऐसे शख्स को भारत–पाकिस्तान के बीच विभाजक रेखा खींचने का जिम्मा सौंपा गया।

विभाजन से सबसे ज्यादा व्यथित बापू गाँधी हुए। उन्होंने विभाजन पर लगातार असहमति जताई थी क्योंकि उन्हें पता था कि – ''गलत फैसलों से हिंसा उपजती है और हिंसा से अपसंस्कृतियाँ और रक्तपात .... ''[11] उनका कहा न मानने का दुष्परिणाम हम भारत–पाकिस्तान युद्धों के (1948, 65, 71, 99) रूप में देख चुके हैं। गांधी जी के विचार आज भी उतने प्रासंगिक हैं जितने तब थे, भले ही तत्कालीन पीढ़ियों ने उनके विचारों को नजरांदाज किया। नहीं तो क्या कारण है कि विश्वशांति का प्रतीक समझे जाने वाले ''संयुक्त राष्ट्र'' की महासभा में गांधी जी की तस्वीर लगाई गई है या फिर उनके जन्मदिवस 2 अक्टूबर को अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप में मनाया जा रहा है।

कमलेश्वर ने उपन्यास के विराट कथ्य में ऐतिहासिक घटनाओं के शिनाख्त के अतिरिक्त विश्व समुदाय के इतिहास और वर्तमान शरीर पर फोड़ों से नासूर बनते पाकिस्तानों जैसे ईस्ट तिमार और वेस्ट तिमार, बांग्लादेश और पाकिस्तान, पाकिस्तान में बन रहे पख्तूनिस्तान, सिंध, ब्लूचिस्तान और सर्बिया, कोसोवा, यूगोस्लाविया, लेबनान, इस्रायल, फिलिस्तीन आदि के कारणों की पड़ताल करता

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 03, March 2026

है। इस विभाजन से दुनिया की हिंसा, चीख–पुकार, बलात्कार, शोषण, हत्याओं की परम्परा को बंद करने की एक कोशिश का नाम है 'कितने पाकिस्तान'।

यह प्रशंसनीय है कि आज के भूमंडलीकरण, पूंजीवाद, उदारीकरण के दौर में घुटती–पिसती पीड़ित, शोषित, दलित, दमित, बहिष्कृत और हाशिए पर पड़ी जनता के पक्ष में कमलेश्वर इस उपन्यास से एक मात्र यही लक्ष्य पाना चाहते हैं कि ''दुनिया भर में एक के बाद दूसरा पाकिस्तान बनाने की लहू से लथपथ यह परम्परा अब खत्म हो। ''[12] सही भी है 'सर्वे भवन्तुः सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः'' की विश्व कल्याण भावना के चरमोत्कर्षक पर पहुँचे कमलेश्वर के अदीबी दिल की इससे बड़ी महत्वाकांक्षा और क्या हो सकती है?

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. आधा गाँव – राही मासूम रजा, राजपाल एण्ड संस प्रकाशन दिल्ली–6, छठा संस्करण, पृ. 269
2. वही, पृ. 313
3. कितने पाकिस्तान – कमलेश्वर, राजपाल एण्ड संस प्रकाशन दिल्ली–6, नौवां संस्करण–2006, पृ. 325
4. भारत में सांप्रदायिकता – असगर अली इंजीनियर, इतिहास बोध प्रकाशन इलाहाबाद प्रथम संस्करण–2003, पृ. 75
5. वही, पृ. 78
6. कितने पाकिस्तान – कमलेश्वर, पृ. 282
7. माउंटबेटन और भारत–विभाजन – लैरी कॉलिन्स और दामिनिक लॉपियर, अनु प्रकाशन जयपुर, संस्करण–2005, पृ.– 56–62
8. कितने पाकिस्तान – कमलेश्वर, पृ. 286
9. आधुनिक – भारत, सुमित सरकार, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, संस्करण–1992, पृ. 468
10. माउंटबेटन और भारत विभाजन – लैरी कॉलिन्स, दामिनिक लैपियर, पृ. 317
11. कितने पाकिस्तान – कमलेश्वर, पृ. 60
12. वही, आवरण पृष्ठ से